JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक परिवर्त्तन में स्वच्छता की भूमिका

पर्यवेक्षिका
डॉ0 मंजू झा
एसोसियेट प्रोफेसर
समाजशास्त्र–विभाग

शोध छात्र
सुरेन्द्र कुमार पंडित
समाजशास्त्र–विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश :–

स्वच्छता प्रत्येक की आनिवार्यता व आवश्यकता है। उनके उपयोग व महत्त्व को निर्विकल्प कह सकते है। स्वच्छता, विकास और सामाजिक परिवर्त्तन आपस में धनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। स्वच्छता एक सीखा व्यवहार हे। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में हमेशा सीखा हुआ व्यवहार करता है। समाज में यदि स्वच्छता नहीं है तो इसका सीधा अर्थ हुआ कि समाज निर्मित कार्यावली (Agenda)में ही स्वच्छता नहीं था। स्वच्छता की बातें पहले भी होती रही, लेकिन आज यह आजमनों के बीच सुर्खियों में है। यही सामाजिक परिवर्त्तन का लक्षण है।

कुंजी–शब्द :– स्वच्छता, सामाजिक परिवर्त्तन, व्यवहार, आवश्यकता।

स्वच्छता :–

मनुष्य जीवन के लिए स्वच्छता एक बुनियादि आवश्यकता है। आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में स्वच्छता की जानकारी प्राप्त हो सकता है। मन व दिमाग, धर्म व आध्यात्मिक ये सब आंतरिक स्वच्छता के आयाम है। वहीं अच्छी समाजिक व आर्थिक स्थिति ये सब बाह्य स्वच्छता के आयाम है। बाह्य स्वच्छता का मूलाधार आंतरिक स्वच्छता है। और आंतरिक स्वच्छता बाह्य स्वच्छता का ही कारक है। समाज को विकास व उनके सुखी संपन्न होने की एक दिशा स्वच्छता के अपनाने में रही है। कहा गया है कि ''स्वच्छता से समृद्धि पैदा होती है, स्वच्छता से सुख पैदा होता है।''

कमजोर स्वास्थ्य व स्वच्छता का देश के लोगों के आयोग्य पर विपरित प्रभाव पैदा होता है। देश के आर्थिक व सामाजिक परिवेश को भी प्रभावित करता है। वैश्विक स्तर पर भारत देश स्वच्छता के संदर्भ में अब भी पिछड़ा हुआ है। गॉवों में मलमुत्र का आरोग्य निष्काषन, दुषित–जल, शौचालय का अभाव नदी–तालाबों की गंदगी आदि। व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्वच्छता की जिम्मेदारी हमलोगों की है। स्वच्छता ग्रहण करने वाले और स्वच्छता प्रदान करने वाले दोनों एक दुसरें के प्रति चेतना व जागरूक होते हैं।

शिशिर (सिन्हा स्वच्छता की ओर एक कदम समृद्धि की ओर बढ़ते कदम : जनवरी 2015 : 29) ने लिखा है। ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झाड़ू क्या उठाया उसके तो दिन ही बहुर गए। साफ–सफाई पहले भी होती रही, लेकिन अब सफाई सुर्खियों में हैं''

बिन्देश्वर पाठक (Bindeshwar Pathak : Sociology of Sanitation : 2013**)** का कहना है ''स्वच्छता का समाजशास्त्र, सामाजिक वंचन, जल, जनस्वास्थ्य, आरोग्यता, पारिस्थितिकी, पर्यावरण, गरीबी, लैंगिक समानता, बच्चों के कल्याण एवं लोगों के सशक्तिकरण से जुड़े समाज की समस्या का समाधान का वैज्ञानिक अध्ययन है, जो दीर्घकालीन विकास और दार्शनिक व आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के माध्यम से खुशहाल जीवन जीने एवं अन्यों के जीवन को बेतहर बनाए।''

स्वच्छता विकास की एक प्रक्रिया है जिससे सामाजिक परिवर्त्तन सम्भव होता है। यह अपेक्षित दिशा में परिवर्त्तन की प्रक्रिया है। इसका सरोकार सामाजिक विकास से है।

सामाजिक परिवर्त्तन : समाजशास्त्र में सामाजिक परिवर्त्तन का अध्ययन प्रारम्भ से ही रोचक विषय बना हुआ है। यह एक सार्वभौमिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। प्राचीन चिन्तकों से लेकर आजतक इस पर काफी प्रकाश डाला गया है। जी मार्शल (Gordon Marshall : 1998: 64) का मानना है कि एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में सामाजिक परिवर्त्तन पर चिंतन की शुरूआत 19वीं सदी के मध्य से हुई। **(आर0एम0 मैकाईवर एंव सी0एच0 पेंच (R.M. maclver and C.H. page : Sociaety an Intro ductory : 1985 : 511)** ने लिखा है, ''समाजशास्त्रियों के नाते हमारे प्रत्यक्ष सामाजिक सम्बन्धों से हैं। इनमें हुए परिवर्त्त को ही हम समाजिक परिवर्त्तन मानेंगे।'' **(एम0 डी0 जेन्सन (M.D. Jenson : Introduction ot sociology and social Problem : 1959)** का कहना है ''व्यक्तियों के कार्य करने और विचार करने के ढ़गों में होनेवाले रूपान्तरण को सामाजिक परिवर्त्तन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

समाज के किसी क्षेत्र में बदलाव, सामाजिक परिवर्त्तन है। इस रूप में यह तीन तथ्यों पर केन्द्रित है : (1) सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्त्तन (2) सामाजिक संगठन (समाज की संरचना एवं प्रकार्या) में परिवर्त्तन और (3) व्यक्तियों के विचारों में परिवर्त्तन। इन परिवर्त्तनों के फलस्वरूप सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक आदि क्षेत्रों में होनेवाला, परिवर्त्तन सामाजिक परिवर्त्तन कहा जा सकता है।

स्वच्छता और सामाजिक परिवर्त्तन :–

विविध – परिस्थियों के अधीन सामाजिक परिवर्त्तन होता है। स्वच्छता सामाजिक परिवर्त्तन के सशक्त माध्यम है। स्वच्छता के समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वीकृत करता है कही कोई अस्वीकृत कर तब भी पुनः विचार के पश्चात उसका स्वीकार्य करना अनिवार्य हो जाता है।

स्वच्छता से विविध परिवर्त्तन :–

1. **लोगों की विचारधारा में परिवर्त्तन** :– स्वच्छता एक सीखा हुआ व्यवहार है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में हमेशा सीखा व्यवहार करता है। समाज में यदि स्वच्छता नहीं है तो इसका सीधा अर्थ हुआ कि समाज निर्मित कार्यवाही (Agenda) में ही स्वच्छता नहीं था। भारतीय समुदाय के अधिकांश व्यक्तियों में स्वच्छता के प्रति जागरूक बढ़ी। ये अपने शारीरिक स्वच्छता, आवास की स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वच्छता के महत्व से अवगत हो अपने में बदलाव ला रहे है।

2. **रोजगार के नये अवसर** :– स्वच्छता व शौचालय के संपूर्ण उपयोग से रोजगार के नये आयाम खूले है। संबंधित सामग्री, साधन, इत्यादि का उत्पादन, बिकरी, नयी तकनीको का उपयोग रोजगार के निर्मित बने है।

3. **विवाह संबंधी विचारों में बदलाव** :– लोगों की मानसिकता में सुधार हुआ है। शौचालय सुविधायुक्त घरों में अपनी बेटी के विवाह का विचार लोग करने लगे है। स्वच्छता व शौचालय का महत्व पदस्थापित हुआ है। जीवन साथी के चयन में भी मानदंड बदले है।

4. **उच्त्तर जीवन शैली (Higher Life Style)** :– वर्तमान समय में स्वच्छता उच्त्तर जीवन शैली का हिस्सा बनता जा रहा है। यह न सिर्फ उच्चवर्ग व जाति एंव नगर की विशिष्ट जीवन शैली को हिस्सा बनता जा रहा है। इसे प्रतिष्ठा से जोड़ने की प्रवृत्ति में विकास हुआ है। आज हाथ में झाड़ू का होना, अपमान नहीं प्रतिष्ठों का सूचक है। इस तरह स्वच्छता सामाजिक परिवर्त्तन का यंत्र के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

5. आर्थिक बदलाव **(Economic Change)** :– स्वच्छता ने आर्थिक बदलाव के माध्यम से समाज में परिवर्त्तन को गति प्रदान की है। स्वच्छता ने उद्योग का रूप ले लिया है। यहाँ न सिर्फ उत्पात का कारोबार है बल्कि बाई–प्रोडक्ट भी लाजबाव है। यह उने गिने चुने उद्योगों में शुमार है जो केवल आदत बनाने से मुनाफा बढ़ाने का रास्ता बढ़ाती है। यह बाजार व रोजगार का जरिया बनी है। प्रत्येक घर शौचालय बनाने भर से उत्पादन व रोजगार के कितने प्रचुर अवसर मिलेंगे। शौचालय के लिए टाईल्स बनाने वाले उद्यमी से लेकर उपकरण फिट करने वाले प्लंबर और दीवार खड़ी करने वाले राजमिस्त्री तक सभी आते हैं। शौचालय सफाई से जुड़े ब्रश व हार्पिक आदि की मांग इसे और गति प्रदान करती है। साफ–सफाई का नया अर्थशास्त्र सामने है।

स्वच्छता का परिपेक्ष्य अस्पष्ट है, लापरवाही, गैर जिम्मेदारना, रवैया कई, जोखिम पैदा करता है। कई कलाओं में भी स्वच्छता की महत्ता को स्वीकार किया गया है। आज यह आमजनों के बीच सुर्खियों में है। यही सामाजिक परिवर्त्तन का लक्षण है।

संदर्भ सूची :–

1. **Sinha, Shishir (2015) :** स्वच्छता की ओर एक कदम समृद्धि की ओर बढ़ते कदम, योजना जानवरी 2015, सूचना भवन, सी0जी0ओ0, परिसर, गॉधी रोड, नई दिल्ली, 110003, भारत।

2. **Verma, Kamlesh (2017) :** सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का ग्रामीण लोगों के स्वास्थ्य पर प्रभाव, राधाकमल मुखर्जी, चिंतन परम्परा, बरेली, 243005, उत्तर प्रदेश, भारत।

3. **Beghela, Anil (2015) :** स्वच्छता का समाजशास्त्र :कल्याण पब्लिकेशन, सी0–30, सत्यवती नगर, दिल्ली–110052, भारत।

4. **Pathak, Bindeshwar (2016) :** विकास का समाजशास्त्र विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह मेमोरियल चेयर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत।

5. **Srivastav, Sanjay (2015) :** स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत कुरुक्षेत्र, जुलाई 2015, कमरा नं0 655, प्रसार प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन सी0जी0ओ0 काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003 भारत।

6. **सिंह, गोपी रमण प्रसाद (2018),** स्वच्छता का समाजशास्त्र परिचय, हेरिटेज पाब्लिकेशन 108/110, जलाल मंजिल तेमकर स्ट्रीक, मुम्बई।

Website :-

1- www.sulabhinternational.org

2- www. sulbhtoilet meseum.org

3- www. govt.of india.com

4- www. sociology of sanitation.com

Journal:-

1- Sulabh India, November, 2012, Issue : 11, Volume-24